- महादेवी वर्मा -

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार "छायावादी कहे जाने वाले कवियों में महादेवी जी ही रहस्यवाद के भीतर रही हैं। उस अज्ञात प्रियतम के लिए वेदना ही इसके हृदय का भाव केंद्र है जिससे अनेक प्रकार की भावनाएँ घूट घूट कर झलक मारती रहती हैं। वेदना से इन्होंने अपना स्वाभाविक प्रेम व्यक्त किया है, उसी के साथ वे रहना चाहती हैं। उसके आगे वे मिलन सुख को भी वे कुछ नहीं गिनतीं।" वे कहती हैं कि -

'मिलन का मत नाम ले मैं विरह में चिर हूँ।'

इस वेदना को लेकर इन्होंने हृदय की ऐसी अनुभूतियाँ सामने रखी हैं जो लोकोत्तर हैं।

आ० शुक्ल महादेवी वर्मा के बारे में लिखते हैं कि इनकी पीड़ा चसका बहुत अधिक है।

"तुमको पीड़ा में ढूँढा।
तुमको ढूँढेगी पीड़ा॥"

सर्वप्रथम जयशंकर प्रसाद ने इस काव्य धारा को स्पष्ट किया और बताया कि "छायावाद से तात्पर्य कविता की एक ऐसी नई प्रणाली से है जो भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है, जिसमें ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौंदर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचार वक्रता के साथ साथ स्वानुभूति की विवृत रहती है और जिसमें अपने भीतर से मोती के पानी की तरह अन्तर स्पर्श करके भाव समर्पण करने वाली अभिव्यक्ति को महत्व दिया जाता है।"

छायावादी काव्य में सात अभिव्यक्तिगत विशेषताएँ हैं-

① चित्रमयी भाषा
② प्रतीकात्मकता
③ लाक्षणिकता
④ उपचार वक्रता
⑤ नादात्मकता
⑥ नवीन अलंकारिकता
⑦ नवीन छंद बद्धता

Scanned by CamScanner

महादेवी वर्मा ने चित्रमयी भाषा का प्रयोग किया है। महादेवी ने महात्मा गांधी के प्रति अपने मार्मिक हृदयगारों को व्यक्त करते हुए भारत माता का ~~कितना~~ सजीव एवं सुंदर चित्र खींचा है -

'शुभ्र हिम - शतदल - किरीटनी, किरण कोमल कुंतला जो,
सरति - तुंग - तरंगमालिनि, मरुत चंचल - अंचला जो।'

महादेवी वर्मा ने प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है तथा अपनी काव्य कला को सुसज्जित किया है। उदा० - 'टूट गया वह दर्पण निर्मम' गीत है जिसमें 'दर्पण' को माया का प्रतीक बनाकर बड़ी ही रमणीय कल्पना की है -

'टूट गया वह दर्पण निर्मम
किसमें देख सँवारूँ कुन्तल,
अंगराग पलकों का मल-मल।'

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षन प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर।'

छायावादी काव्य में सबसे अधिक लाक्षणिक पदावली का प्रयोग हुआ है। इसमें प्रायः ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जिनका शाब्दिक अर्थ अभिधा शक्ति से भिन्न लक्षना शक्ति के द्वारा जाना जाता है। महादेवी वर्मा ने 'स्नेहहीन दीपक' का अर्थ तेल बिना जलते हुए दीपक जैसे तारे हैं।

'जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक।'

महादेवी वर्मा ने उपचार वक्रता का वर्णन किया है। उपचार वक्रता का ~~अर्थ~~ है अभिप्राय है, जहाँ अमूर्त में मूर्त का, घन में द्रव का, अचेतन में चेतन का आरोप करके काव्य में नूतनता एवं वक्रता उत्पन्न की जाती है।

'छाया की औरव-मिचौनी, मेघों का मतवालापन
रजनी के श्याम कपोलों पर दरकीले श्रम के कन।'

Scanned by CamScanner

महादेवी की कविताओं में गीतात्मकता दिखायी देती है। उन्होंने अपने हृदय की संचित अनुभूतियों को ही गीत के रूप में उतारा है अपने सुख-दुख एवं हर्ष-विषाद को वे अपने गीतों का विषय बनाती हैं। उनके गीतों में व्यक्ति एवं जगत का दुःख सर्वत्र व्याप्त है।

'विरह का जलजात जीवन विरह का जलजात
वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास।'

छायावादी काव्य में तीन नये अलंकारों का प्रयोग किया है ① मानवीकरण ② विशेषण-विपर्यय ③ एवन्यर्थव्यंजना

मानवीकरण-

'मर्मर की सुमधुर नूपुर-ध्वनि
अलि गुंजित पदमों की किंकिण
भर पद गति में अलस-तरंगिणि।'

विशेषण विपर्यय-

'निद्रा उन्मन कर कर विचरण
लौट रही सपने संचित कर।'

एवन्यर्थ व्यंजना-

'उठते कन-कन से फूट-फूट मधु के निर्झर से
सजल गात।'

छायावादी कवियों ने नये छंदों का प्रयोग किया। इन छंदों में संगीत हो या न हो किंतु एक लय होती है तान होती है और एक क्रम होता है। महादेवी ने संगीतमय तुकांत शब्दों का प्रयोग किया है क्योंकि उन्होंने गीतों का निर्माण अधिक किया है। उनमें आरोह-अवरोह की योजना की गई है।

'कीर का प्रिय आज पिंजर खोल दो
हो उठी है चंचु दुकर तीलियाँ भी वेणु सस्वर।'

Scanned by CamScanner

केदारनाथ सिंह 'महादेवी के काव्य-बिम्ब काव्य भाषा के संदर्भ में कहते हैं कि "महादेवी जी ने जाने-पहचाने आत्मीय शब्दों को संगीत और व्यंजना का नया सौंदर्य प्रदान किया है।"

बिम्बात्मक पंक्तियाँ

'कौन आया था न जाने
स्वप्न में मुझको जगाने
याद में इन अंगुलियों की
हैं मुझे पर युग बिताने।'

इस छन्द में बिम्ब केवल एक ही है- स्वप्न में देखी हुयी अंगुलियाँ।

प्रतीक योजना

अलि कैसे उनको पाऊँ ?
वे आँसू बनकर मेरे
इस कारण ढुल ढुल जाते।
(रश्मि)

नीहार (1930) रश्मि (1932) नीरजा (1934) सांध्यगीत (1936)
(यामा)
दीपशिखा (1942)

महादेवी कहती हैं कि 'वास्तव में काव्य मानस के सुख-दुखात्मक संवेदनों की ऐसी कथा है जो उक्त संवेदनों को सम्पूर्ण परिवेश के साथ दूसरे की अनुभूति का विषय बना देती है।'

- <u>महादेवी वर्मा</u>- (1907 - 1987) फर्रुखाबाद

नीहार (1930)
रश्मि (1932)
नीरजा (1935)
सांध्यगीत (1936)
दीपशिखा (1942)

- यामा (1940) में नीरजा, नीहार, रश्मि और सांध्यगीत के सभी गीतों का संग्रह है।

छायावाद के चार स्तंभों में महादेवी वर्मा एक हैं। प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी के नाम छायावाद के पर्याय हैं। छायावाद और छायावादी कवियों की चर्चा के क्रम में महादेवी का नाम सबसे बाद में आता है। वे छायावाद की अंतिम कड़ी थीं। हृदय की सूक्ष्म एवं गहन भावनाओं को जिस बारीकी के साथ महादेवी ने अपने गीतों में उकेरा है, वह किसी भी स्थापित गीतकार के लिए ईर्ष्या का विषय हो सकता है। महादेवी के गीत सीधे-सीधे हृदय को झंकृत करने वाले गीत हैं।

गीत साहित्य की पुरानी विधा रही है, पर जिस गीति-काव्य का विकास आधुनिक काल में हुआ है, वह पूर्ववर्ती गीतों से भिन्न है। पूर्ववर्ती गीतकारों में विद्यापति, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कहने का मतलब यह है कि पूर्ववर्ती गीतों और आधुनिक गीतों में पर्याप्त अंतर है।

महादेवी ने गीतों में कला पक्ष की अपेक्षा भाव पक्ष को अधिक महत्त्वपूर्ण आसन पर आसीन किया है। इसी तथ्य को रेखांकित करते हुए 'इंद्रनाथ मदान' ने लिखा है- "उन्होंने केवल आत्मप्रकाशन पर दृष्टि रखी है और इस बीच में यदि नवीन शब्दों, प्रतीकों और छंदों का प्रयोग हो गया है तो वह संयोगवश ही हुआ है। उनकी कविता में वेदना टीस अधिक है जो उनके काव्य की मूल भावना है। महादेवी की कविता में वेदना और करुणा का साम्राज्य है।"

महादेवी ने दीपशिखा की भूमिका में गीत की परिभाषा देते हुए लिखा है- "साधारणतः गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख-दुखात्मक अनुभूति का वह शब्द रूप है जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके।"

महादेवी के काव्य पर दुःखवाद का सर्वाधिक प्रभाव है। महादेवी जिस दुःखवाद की बात करती हैं, उनके हृदय की जो पीड़ा है वह अनजाने ही उनके जीवन में बस गई है। इस पीड़ा को वे छोड़ना चाहकर भी नहीं छोड़ सकती क्योंकि यह उनके प्रियतम की देन है और प्रियतम भी ऐसा-वैसा नहीं है। वह

Scanned by CamScanner

तो विश्व की हर सांस में व्याप्त है। महादेवी का हृदय जिस अभाव का अनुभव करता है, वह उसी में लीन रहकर खुशियां मनाना चाहती हैं।

'अपने इस सूनेपन की मैं हूँ रानी मतवाली
प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली।'

महादेवी ने अपने प्रियतम की विरह वेदना को 'मधुर' और 'मधु' जैसे विशेषणों से संबोधित कर यह स्थापित किया है विरह वेदना उनको अत्यंत प्रिय है। महादेवी का यह भाव बौद्ध दर्शन के दुःखवाद से प्रभावित है किन्तु उन्होंने बौद्ध दर्शन के अनात्मवाद एवं निर्वाण-दर्शन के सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया है। उन्हें तो आत्मवाद ही प्रिय है। दुख एवं करुणा की प्रियता के कारण ही वे प्रियतम से मिलन नहीं चाहती-

शून्य मेरा जन्म था, अवसान है मुझको सवेरा
प्राण आकुल के लिए संगी मिला केवल अंधेरा,
मिलन का मत नाम ले, मैं विरह में चिर हूँ।

महादेवी ने स्वयं को दुःख के जल से भरी हुई बदली कहा है -

'मैं नीर भरी दुख की बदली'

उन्हें विरह से लगाव इतना है कि वे जीवन का उद्भव, विकास और विनाश विरह में ही मानती हैं।

'विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात
वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास।'

गीतों में रचनाकार अपने निजी जीवन और जगत से उपलब्ध सुख-दुख, हर्ष-शोक, करुणा-आनंद, हास्य-रुदन आदि को अभिव्यक्त करता है।

महादेवी ने अपने गीतों के बारे में खुद कहा है कि "मेरे गीत अध्यात्म के अमूर्त आकाश के नीचे लोकगीतों की धरती पर पले हैं।"

Scanned by CamScanner